International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 15-04-2024, Accepted: 14-05-2024, Published: 30-05-2024
Volume 10, Issue 2, 2024, Page No. 35-36

मृणाल पाण्डे के साहित्य में नारी चेतना की अभिव्यक्ति

कु0 जया पाण्डेय
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
हिन्दी साहित्य में महिला साहित्यकारों की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मृणाल पाण्डे उन महिला साहित्यकारों में अपना एक विशेष स्थान रखती है। मृणाल पाण्डे की रचनाओं में स्त्री जीवन के प्रत्येक पहलु पर प्रकाश डाला गया है।
इनकी रचनाओं में हर वर्ग की स्त्रियों के संघर्षों का वर्णन हुआ है। इनकी स्त्रियाँ जहाँ एक तरफ हर प्रकार के शोषण का शिकार हो रही है वहीं दूसरी ओर इस शोषण के प्रति उनमें विद्रोह की भावना भी जाग रही है। इनकी रचनाओं में स्त्री–अस्तित्व सामाजिक असमानता, पितृसत्ता की बिडंबनाएँ तथा स्त्री की आत्म–सम्मान का संघर्ष अत्यंत गहराई से उभरता है। वहीं दूसरी तरफ नारी चेतना की अभिव्यक्ति विभिन्न रूपों में देखने को मिलती है। इनका साहित्य केवल स्त्री–संवेदना ही नहीं, बल्कि स्त्री की सामाजिक – सांस्कृतिक चेतना और परिवर्तन की आकांक्षा को भी स्वर देता है।

मूल शब्दः मृणाल पाण्डे, नारी चेतना, अभिव्यक्ति, आत्मसम्मान, स्वतंत्रता, संघर्ष, पितृसत्तात्मक

हिन्दी साहित्य में स्त्री की उपस्थिति प्रारम्भ से रही है, परन्तु लम्बे समय तक वह केवल साहित्य में 'विषय' के रूप में वर्णित रही 'वक्ता' के रूप में नहीं। पुरुष साहित्यकारों द्वारा स्त्री जीवन की समस्याओं और उनके संघर्षों को अपने अनुभवों के माध्यम से व्यक्त किया गया। स्वतंत्रता आन्दोलन एवं आधुनिक शिक्षा के प्रभाव से स्त्रियों ने स्वयं को अभिव्यक्ति करना प्रारम्भ किया, स्त्री अब विचार नहीं विचारक के रूप में उभरी।
बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में स्त्री विमर्श और नारी चेतना जिस रूप में साहित्य में प्रवेश किया वह अभूतपूर्व है। साहित्य में स्त्रियों की स्थिति, उनके संघर्ष और उनके प्रति होने वाले अत्याचारों तथा उसके विरोध में जो चेतना अभिव्यक्त हुई उसे ही 'नारी चेतना' का नाम दिया गया। नारी को अपने अधिकारों के प्रति सजग करना, अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए प्रेरित करना एवं अपने कर्तव्यों के पालन हेतु जो चेतना महिला साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में व्यक्त किया उसे ही साहित्य में नारी चेतना की अभिव्यक्ति कहा गया।
आधुनिक काल में स्त्रियों के जीवन मूल्यों में व्यापक परिवर्तन दिखायी देते हैं। आधुनिक महिला उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं में इसी परिवर्तन को व्यापक रूप से अपनी स्त्री पात्रों के माध्यम से व्यक्त किया है। परंपरागत एवं आधुनिक जीवनमूल्यों के बीच संघर्ष करती हुई स्त्री की मानसिक स्थिति का चित्रण बहुत ही मनोवैज्ञानिक ढंग से किया गया है। 'मृणाल पाण्डे' का नाम उन लेखिकाओं में प्रमुख रूप से लिया जाता है जिसके साहित्य में सामाजिक धार्मिक, मानसिक, पारिवारिक एवं शारीरिक शोषण से पीड़ित स्त्री के संघर्ष को प्रमुखता से स्थान दिया गया है। मृणाल पाण्डे के साहित्य में नारी चेतना केवल विरोध का स्वर नहीं, बल्कि आत्मसाक्षात्कार और आत्मसम्मान की पहचान है। मृणाल जी ने अपने साहित्य में कामकाजी नारी की समस्याओं, स्त्री पुरुष के बदलते सम्बन्ध, स्त्री की तनावग्रस्त मानसिकता एवं मुक्ति की कामना को बड़ी सूक्ष्मता से अंकित किया है।
मृणाल पाण्डे एक सफल उपन्यासकार कहानीकार, नाटककार, निबन्धकार के साथ एक सफल पत्रकार भी हैं। मृणाल पाण्डे के साहित्य में स्त्री केवल संवेदना का प्रतीक बनकर नहीं रह गयी है अपितु वह संघर्ष, आत्मबोध और स्वतंत्र अस्तित्व के रूप में उभरी है। मृणाल जी ने अपने साहित्य नारी जीवन की तमाम विशिष्टताओं और जटिलताओं को बड़ी बारीकी से प्रस्तुत किया है। मृणाल पाण्डे ने अपने साहित्य में स्त्री को पुरुष निर्भर, अस्तित्व से मुक्त कर आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर दिखाया। इनकी स्त्रियाँ अपने भीतर की अस्मिता को पहचानती हैं और समाज द्वारा निर्मित सीमाओं को चुनौती देती है।
स्त्री चिंतन मृणाल पाण्डे के साहित्य का केन्द्र बिन्दु है। स्त्री चिंतन के सन्दर्भ में मृणाल जी लिखती हैं– अकसर हितैषीगण और मित्र मुझसे कहते हैं कि अपनी लेखनी और शोध का विषय प्रायः स्त्रियों की स्थिति और समस्याओं तक ही सीमित रखकर मैं अपने लेखक और शोध दोनों ही क्षेत्रों के साथ अन्याय कर रही हूँ। इन सुधीजन को यह सहज–सी बात न जाने क्यों नजर नहीं आती कि स्त्रियों की स्थिति, समस्याओं और उनके दिलों की नाल तो हमेशा से सीधे और बड़े स्पष्ट रूप में पूरे मानव–जगत और कार्य–व्यापारों के मूल से जुड़ी हुई है। स्त्रियाँ और उनकी समस्याएँ किसी और लोक की या चिन्तन जगत की उपज नहीं हैं और चूँकि दुनिया भर में सर्वहारा वर्ग का अधिकांश हिस्सा स्त्रियों और बच्चों का ही है, अतः उसकी परख किए बिना विश्व में राजनीतिक, आर्थिक या समाजशास्त्रीय किसी भी क्षेत्र के असन्तुलन व विश्व गुरुओं का ब्यौर नहीं बिठाया जा सकेगा। मैं ही नहीं, किसी भी ऐसे लेखक या लेखिका के लिए, जो किसी भी देश और समाज की राजनीति, अर्थशास्त्र, कला अथवा सामाजिक ढाँचे को समझना – समझाना चाहें, स्त्रियों की इस विशाल दुनिया से सीधा और ईमानदार साक्षात्कार करना एक अनिवार्य और पहली शर्त है।"[1]
मृणाल पाण्डे के कथा साहित्य में नारी चेतना बहुआयामी स्वरूप में अभिव्यक्त हुई है। मृणाल पाण्डे की नायिकाएँ आत्मसम्मान को सर्वोपरि मानती हैं, वे स्वतंत्रता के लिए प्रयासरत हैं। वे चाहती हैं कि वे आत्मसम्मान के साथ पूरी स्वतंत्रता के साथ जीवन यापन करें 'रास्तों में भटकते हुए' उपन्यास में मंजरी की माँ का स्वाभिमान अपने पुत्र के आगे हाथ फैलाने अथवा साहचर्य की याचना से रोकता है–
माँ के घर के पर्दे भले ही सस्ती छींट के हो, वह उन्हे नियमित रूप से धोकर इस्तरी करवाने भेजती है फिर छल्लों को मजबूती से दुरुस्त करके उनके टाँगा जाता है। बाहर सड़क से घर की खिड़की कोई देखे तो भीतर बैठी माँ के हाड़ – माँस कतरते उस गर्वीले द्वारिदय का कोई सुरग नहीं पा सकता।"[2]
मृणाल पाण्डे की नायिकाएँ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता चाहती हैं। उनका स्वाभिमान पुरुषों पर आर्थिक रूप से आश्रित होने को स्वीकृति नहीं देता। स्त्री जीवन की विसंगतियाँ, उनकी आन्तरिक

पीड़ा तथा महिला पत्रकारों के साथ होने वाले शोषण को मृणाल पाण्डे ने अपने साहित्य में मुख्य रूप से स्थान दिया है। मृणाल पाण्डे स्वयं एक पत्रकार हैं। इनके उपन्यास 'रास्तों पर भटकते हुए' की नायिका मंजरी भी एक पत्रकार है। मंजरी भी शोषण का शिकार होती है। वह पत्रकारिता के क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरूद्ध है। अन्ततः वह पत्रकारिता भी छोड़ देती है।

मृणाल पाण्डे के साहित्य में पितृसत्ता के विरूद्ध प्रतिरोध की चेतना की अभिव्यक्ति हुई है। इनकी नायिकाएँ पितृसत्तात्मक समाज का विरोध करते हुए समानता की माँग करती हैं। स्त्रियों ने हर स्तर पर पितृसत्तात्मक समाज का विरोध किया है। चाहें माँ द्वारा अपने बेटा का पत्नी द्वारा अपने पति का प्रेमिका द्वारा प्रेमी का हर एक स्त्री ने पुरुष का प्रतिरोध किया है। विरोध का स्वर बहुत ऊँचा तो नहीं है फिर भी उसके लक्ष्य में चूक नहीं है। मंजरी कहती हैं कि – "सिलबिले किस्म के स्नेह प्रदर्शन के लिए मेरे जीवन में जगह नहीं रही। ..... बंटी की माँ जैसी जटिलता भरी जिन्दगी और कराह भरे प्रेम–व्यापारों के प्रति मुझमें कोई उत्सुकता या करूणा नहीं उपजती थी। औरतों की ऐसी कमजोरी जो उन्हें अपने ही आततायी के चरण थामकर लौटने और उसकी अनुनय विनय करने के बाध्य करे देखकर, मुझे उबकाई आती है। पहले घर से भागकर मूर्ख किस्म का प्रेम करेंगी, फिर दोगला प्रेमी दगा दे जाए और एक अदद हरामी औलाद गोद में आन पड़ी, तो सिर कटी मुर्गी की तरह दड़बे के इस कोने तक मौत छींटती हुई दौड़ेगी।"[3]

मृणाल पाण्डे ने अपनी कहानियों में विधवा समस्या सतीप्रथा अनमेल विवाह, बाल विवाह, दहेज प्रथा, यौन – शोषण आदि समस्याओं को उठाया है। अपनी कहानियों द्वारा मृणाल पाण्डे ने पुरुषवादी सोच का पूरी तरह से विरोध किया है। इनकी नायिकाएँ स्वयं के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए जद्दोजहद करती हुई दिखायी देती हैं। इनकी कहानी में जहाँ एक ओर स्वयं को केवल पुरुष के भोग और घर परिवार तथा बच्चे पैदा करने की मशीन समझे जाने वाली स्त्रियों का चित्रण है जो इसका विरोध नहीं करती हैं। वहीं दूसरी ओर ऐसी स्त्रियों का भी चित्रण मिलता है जिनमें विद्रोह का स्वर मिलता है जो स्वयं को मशीन न समझकर एक स्वतंत्र अस्तित्व रखने वाला प्राणी समझती हैं।

मृणाल पाण्डे ने अपनी निबन्धों में की स्त्रियों की वर्तमान स्थिति का बखूबी वर्णन किया है।

मृणाल पाण्डे के निबन्धों में स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। कैसे स्त्री को प्रताड़ित और शोषित किया जाता है। आर्थिक व राजनीतिक व सामाजिक विषमताओं का सामना करती है। हर स्तर पर उन्हें संघर्ष करना पड़ता है। मृणाल पाण्डे ने उनके संघर्ष को आवाज दी है। मृणाल पाण्डे स्त्री स्वतंत्रता और लैंगिक बराबरी के लिए सदैव आवाज उठाती हैं उन्हें विश्वास है कि 'एक दिन स्त्रियों की जीत पक्की है।'[4]

सन्दर्भ सूची

1. पाण्डे, मृणाल: स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली 2019 पृष्ठ संख्या 5 (भूमिका से)
2. पाण्डे, मृणाल: रास्ते पर भटकते हुए. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ संख्या 43
3. पाण्डे, मृणाल: रास्ते पर भटकते हुए, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली 2010, पृष्ठ संख्या 102
4. पाण्डे, मृणाल: स्त्री लम्बा सफर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली 2015 पृष्ठ संख्या 128

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक – मृणाल पाण्डे
2. रास्ते पर भटकते हुए – मृणाल पाण्डे
3. रास्ते पर भटकते हुए – मृणाल पाण्डे
4. स्त्री लम्बा सफर – मृणाल पाण्डे
5. परिधि पर स्त्री – मृणाल पाण्डे
6. स्त्री: देह की राजनीति से देश की राजनीति तक – मृणाल पाण्डेय
7. जहाँ औरतें गढ़ी जाती हैं – मृणाल पाण्डे
8. पटरंग पुराण – मृणाल पाण्डे
9. ध्वनियों के आलोक में स्त्री – मृणाल पाण्डे